दृश्य - 2

आज्ञा - हुक़्म, वाणी - स्वर

प्रकार - किस्म, लक्ष्य - मक़सद

पालन - तामील, इच्छा - मंशा

केवल - महज़, देश - कौम

हानि - नुकसान, विषाद - मलाल, सहन - बरदाश्त

◆ **निम्नलिखित कथन इब्राहिम अली के चरित्र की किन-किन विशेषताओं को उजागर करता है?**

താഴെ തന്നിരിക്കുന്ന ഏതെല്ലാം വാക്കുകൾ ഇബ്രാഹിം അലിയുടെ സ്വഭാവസവിശേഷതകളെ പ്രകാശിപ്പിക്കുന്നു?

- *हम दूकानें लूटने या मोटरें तोड़ने नहीं निकले हैं।*
  वे सच्चे स्वराजी हैं।
- *आप अपने सवारों, संगीनों और बंदूकों के ज़ोर से हमें रोकना चाहते हैं -रोक लीजिए! मगर आप हमें लौटा नहीं सकते।-*
  देश को गुलामी से मुक्त कराने के लिए वे सभी पीड़ाएँ सहने को तैयार हैं।
- *हमारे भाईबंद ऐसे हुक्मों की तामील करने से साफ इनकार कर देंगे।-*
  देश की आज़ादी के लिए स्वराजियों के अंग्रेज़ों के विरुद्ध आगे बढ़ने की आशा है।
- *जिस दिन हम इस लक्ष्य पर पहुँच जाएंगे, उसी दिन स्वराज्य सूर्य का उदय होगा।-*
  ज़रूर एक दिन आज़ादी मिलने की प्रतीक्षा है उनके मन में।

♦ **उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर इब्राहिम अली के चरित्र पर टिप्पणी करें।**

മേൽപറഞ്ഞ സവിശേഷതകളുടെ അടിസ്ഥാനത്തിൽ ഇബ്രാഹിം അലിയുടെ സ്വഭാവത്തെക്കുറിച്ച് എഴുതാം.

इब्राहिम अली

वे एक सच्चे देशप्रेमी थे। वे हमारे देश को स्वतंत्र कराने के संग्रामों में सभी लोगों को एकत्रित करके, जुलूस चलाकर अंग्रेज़ों के विरुद्ध आवाज़ उठाते हैं। इस संग्राम के दौरान वे सभी पीड़ाएँ चुपचाप सहकर आगे बढ़ते हैं। स्वराज्य की प्रधानता के बारे में सब लोगों को समझा-बुझाकर और आपसी झगड़ा रोककर एक अच्छे नेता के रूप में वे कार्य करते हैं। गाँधीजी के अनुयायी के रूप में अहिंसा पर बल देकर वे जुलूस चलाते हैं और संग्राम चलाते हैं। गाँधीजी के समान वे भी 'करने या मरने' पर विश्वास रखनेवाले हैं। अंग्रेज़ों की धमकियों ने उनपर कोई प्रभाव न डाला। इसलिए वे बीरबल सिंह से कहते हैं 'आप बेटन चलाएँ दारोगाजी।' देश में शांति स्थापित करने में भी वे ध्यान रखते हैं। इसलिए चोट की थकावट की परवाह न कर वे स्वराजियों के पास चलते हैं। सभी स्वराजियों के मन में देश के प्रति श्रद्धा उत्पन्न कराने में वे सफल हुए।